वृन्दावन के राष्ट्रीय आन्दोलन का

इतिहास

[वृन्दावन की गत ५० वर्षों की राष्ट्रीय
हलचलों का खोजपूर्ण ग्रन्थ]
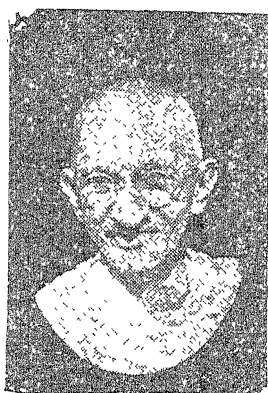
महात्मा गांधी ने भारत के विद्रोह को एक गति नहीं, प्राण नहीं, वरन् आत्मा देदी ; आत्मा जिसके लिए कहा गया है—
"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।"

—धर्मवीर भारती

लेखक—

प्रो० चिन्तामणि शुक्ल एम. ए.